मोदी को राहुल गांधी से नहीं योगी आदित्यनाथ से है ख़तरा

गोकशी पर सख्ती, शहरों—जिलों के नाम बदलकर उनका हिंदू नामकरण करना और कुंभ मेले का सरकारी आयोजन करके धर्म में व्यापार का समावेश करने जैसे कदमों के चलते योगी संघ के लिए हिंदुत्व का नया पोस्टर ब्वॉय बन चुके हैं।

सुशील मानव की रिपोर्ट

तीन राज्यों के चुनावी हार के बाद मोदी पर से भक्तों का भरोसा उठने लगा है, जबकि 2019 का चुनाव बिना दंगों, राम मंदिर और सांप्रदायिक ध्रुवीकरण के बगैर अब संघ-भाजपा के लिए जीत पाना लगभग नामुमकिन है, संघ ये भलीभाँति जानता है। मोदी नाम का कारतूस दग चुका है। 2019 में उसे रिफिल करके इस्तेमाल करना संघ के लिए भी आत्मघाती हो सकता है। पिछले दो-तीन साल से योगी को देश के तमाम राज्यों में बतौर स्टार प्रचारक इस्तेमाल करना संघ की इसी रणनीति का हिस्सा था।

रातोंरात 'योगी लाओ, देश बचाओ' और 'मोदी हटाओ योगी लाओ' 'योगी फॉर पीएम 'जुमलेबाज़ी का नाम मोदी, हिंदुत्व का ब्रांड योगी' की बड़ी बड़ी होर्डिंग का उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में लग जाना संघ की उसी रणनीति का हिस्सा लगती है।

ये होर्डिंग बिना संघ या योगी के इशारे के तो नहीं लगाई जा सकते। तो क्या तीन राज्यों के विधानसभा चुनावों के हार के साथ ही देश की राजनीति से ये मोदी-युग की समाप्ति है। राफेल डील का मामले के कांग्रेस चुनावी मुद्दा बनायेगी ही। राफेल डील की कोई काट फिलहाल तो मोदी के पास नहीं है।

किसान, छात्र, व्यापारी, दलित, अल्पसंख्यक और व्यापारी आदि समुदाय के लोगों में मोदी के खिलाफ़ बड़ा असंतोष और गुस्सा हैं, जबकि इस बीच योगी अपने जहरीले बयानबाजी के चलते हिंदुत्व का नया ब्रांड बनकर उभरे हैं।

यह महज संयोग नहीं कि चार राज्यों की चुनावी रैली में योगी आदित्यनाथ की रैलियाँ प्रधानमंत्री मोदी से ज्यादा रखी गईं। चार राज्यों में योगी आदित्यनाथ ने 74 चुनावी रैलियां की थी। ये दर्शाता है कि भाजपा संघ का भरोसा मोदी की अपेक्षा योगी पर बढ़ा है।

मध्यप्रदेश के चुनावी मंच से योगी द्वारा उछाला गया जुमला 'कमलनाथ जी आपको ये अली मुबारक़, हमारे लिए बजरंग बली ही पर्याप्त हैं', अयोध्या की रैली में आरएसएस और वीएचपी के सदस्यों द्वारा बार बार इस्तेमाल किया जाना ये दर्शाता है कि संघ ने योगी के रूप में हिंदुत्व का नया मुखौटा गढ़ लिया है।

गोकशी पर सख्ती, शहरों जिलों के नाम बदलकर उनका हिंदू नामकरण करना और कुंभ मेले का सरकारी आयोजन करके धर्म में व्यापार का समावेश करने जैसे कदमों के चलते योगी संघ के लिए हिंदुत्व का नया पोस्टर ब्वॉय बन चुके हैं। इसके अलावा फरवरी 2018 में दो दिवसीय 'उत्तर प्रदेश इन्वेस्टर समिट' का आयोजन करके हिंदुत्व और कार्पोरेट को एक साथ साधने की कोशिश की थी।

इस समिट में मुकेश अंबानी, रतन टाटा, गौतम अडानी समेत देश के 5000 बड़े उद्योगपति समेत दुनिया के कई देशों के प्रतिनिधियों शामिल होना इस बात की गारंटी है कि कार्पोरेट भी अगले चुनाव में मोदी के बजाय योगी पर पूँजी इन्वेस्ट करना चाहता है।

गौरतलब है कि यूपी इन्वेस्टर समिट में गुजरात के वो सभी उद्योगपति जिनका मोदी के राजनीतिक उत्थान में बड़ा हाथ रहा है, योगी के साथ खड़े नज़र आये थे। गौतम अडानी ने समिट में कहा था कि हमारा ग्रुप यूपी में वर्ल्ड क्लास फूड पार्क, लोजिस्टिक पार्क खोलेगा। उन्होंने कहा कि यूपी में हमारा लक्ष्य सोलर पावर स्टेशन खोलने का प्लान है, साथ ही मेट्रो बनाने और यूनिवर्सिटी बनाने में भी निवेश करेंगे और अगले 5 साल में हम यूपी में करीब 35 हजार करोड़ रुपए का निवेश करेंगे।

इसके अलावा मुकेश अंबानी ने भी चार बड़े ऐलान किए थे। जिसमें अगले तीन साल में 10 हजार करोड़ रुपए का निवेश और गंगा को साफ करने के लिए सरकार के साथ रिलायंस कंपनी मिलकर काम करेगी।

तो क्या संघ और कार्पोरेट के खुले सपोर्ट के बाद 2019 चुनाव में योगी मोदी को रिप्लेस करके भाजपा का प्रतिनिधित्व करेंगे या फिर राम मंदिर पर अध्यादेश लाकर मोदी-शाह की जोड़ी संघ पर काउंटर फायर करके 2019 के लिए अपना दावा मजबूत कर सकती है। बहरहाल, इतना तो तय है कि मोदी-शाह की जोड़ी को 2019 में कांग्रेस से पहले संघ और योगी से लड़ना होगा।

सॉरी मोदी सर....देश 'वैसा' बिल्कुल नहीं है जैसे आप हैं...!

गीता गैरोला

पहले तो नोट कीजिये कि अपने राम मानते हैं कि यह देश का 'मोदी युग' है ।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बिना किसी किंतु परंतु, अगर मगर, आदि इत्यादि के स्वीकार करना होगा कि आज की सियासत का कोई आख्यान उनके उल्लेख के बिना कहा-सुना, पढ़ा-लिखा नहीं जा सकता। 2014 में नरेंद्र मोदी को बागडोर सौंप कर देश ने कोई गलती नहीं की थी। लेकिन सत्ता के सिंहासन पर बैठने के बाद मोदी सर से गलती हो गयी है...वे देश को वैसा समझ बैठे हैं हैं जैसे वे खुद हैं...।

अब आज की हक़ीकत भी नोट कर लीजिये...

हक़ीक़त ये है कि नरेंद्र मोदी नाम का तिलिस्म टूट कर बिखर चुका है....2013 - 2014 में सोशल मीडिया और टू-डी, थ्री - डी के जरिये गढ़ी गयी उनकी भीमकाय छवि एक 'लिलीपुट' साबित होने की तरफ है।

हिंदी हार्टलैंड के चुनावी नतीजे बता रहे हैं कि मतदाता माईबाप ने 'हाथ' के बारीक 'फनर' से नरेंद्र मोदी की 'माइटी हिमालयन मेन' की मूरत को महज पांच फुट सात इंच के भुरभुरे पुतले में बदल दिया है। राहुल गांधी नाम के सहज साधारण मनुष्य ने नरेंद्र मोदी नाम के देवता, और अवतार के माथे पर से मोर मुकुट और आभूषण उतार कर समस्त आभा मण्डल को धूल धूसरित कर दिया है।

सॉरी मोदी सर...आप इस देश को और समाज को गलत समझ बैठे... नहीं सर...ये देश वैसा बिल्कुल नहीं है जैसा आप समझ बैठे हैं...यह कभी भी उतना 'नीचे' नही उतर सकता जितना आप उतर आये हैं...! नरेंद्र मोदी देश के इतिहास के पहले ऐसे महानायक हैं जिनकी छवि का इतना 'शीघ्रपतन' हुआ है।

आइये सर आपको बहुत थोड़ी सी बातें याद दिलाते हैं।

थोड़ा कहा बहुत समझियेगा सर...!

- बेटी के ब्याह में पैसा नहीं था और आप खुश थे...

मोदी सर...आपने नोटबन्दी के बाद जापान में एक भाषण में हाथ नचा नचा कर कहा था कि घर में बेटी की शादी है...नोटबन्दी के कारण पैसे नही हैं... उस वक्त आप हाथ नचा कर दोनों अंगूठे घुमा कर किसका अपमान कर रहे थे सर.. ?

आप तो देश के अभिभावक हैं न सर...एक भी भारत वासी की बिटिया का ब्याह अगर पैसे के टोटे से रुका होगा तो उस पर क्या बीती होगी... ?

ख़ैर आप नहीं समझेंगे सर..! समझ भी कैसे सकते हैं ..!

- भारत में जन्म लेने पर कोई शर्मिंदा नहीं था...

मोदी सर..याद है न आपने किसी दूसरे देश की धरती पर कहा था कि "लोग 2014 से पहले भारत मे जन्म लेने पर शर्मिंदा होते थे..।"

सर आपको किसने बताया था कि ऐसा होता था.. ? 2014 से पहले भी हमें भारत मे जन्म लेने पर गर्व था ,है और रहेगा।

हां... हमारे देश का मुखिया विदेशी धरती पर ऐसा निर्लज्ज बयान दे रहा है इसे जानकर जरूर शर्मिंदा हुआ था देश।

- कांग्रेस नहीं, विधवा तो हर घर में है...

सर...आपने राजस्थान में किसी पेंशन घोटाले की बात कही।

आपने कहा कि "पैसा कांग्रेस की विधवा के खाते में जाता था..."।

पहली बात अगर आपको पता है कि कांग्रेस की विधवा के खाते में बेजा तरीके से पैसा जाता था तो आपने अब तक कोई कार्यवाही क्यों नहीं की.. ? अब तो वो विधवा जेल में क्यों नहीं है.. ?

दूसरी बात...सर विधवा होना कोई अपराध है क्या.. ? इन पंक्तियों के लेखक की माँ ने दशकों तक वैधव्य का जीवन जिया लेकिन पूरी गरिमा के साथ.. !

सर आपकी परम पूजनीय मातुश्री भी विधवा है ...! उनके श्रीचरणों में नमन।

लेकिन क्या विधवा या विधुर होना किसी भी तरह से अपमान का पात्र होना है.. ?

आप कांग्रेस की जिस विधवा की ओर संकेत कर रहे थे वह देश की एक शहीद पूर्व प्रधानमंत्री की बहू और एक शहीद पूर्व प्रधानमंत्री की पत्नी भी है। क्या उसका अपमान कर आप देश की समस्त स्त्री शक्ति का अपमान नहीं कर रहे थे... ?

- बेटे की मौत का ग़म कोई बाप नहीं भूलता सर..

आपने अभी कुछ दिन पहले कहा था कि नोटबन्दी में जान गंवाने वाले जवान बेटे का बाप भी साल भर में इस ग़म को भूल गया है लेकिन कांग्रेस इस ग़म को नहीं भूल रही..!

सर हमें कांग्रेस से कोई लेना देना नहीं है। लेकिन न ये देश नोटबन्दी की आफत को भूला है और न वो बाप जिसका जवान बेटा इस त्रासदी की भेंट चढ़ गया।

सर... कोई बाप अपने जवान बेटे की मौत का ग़म आखिरी सांस तक न भूलता है और न ही भूल सकता।

याद है सर...'शोले' में मौलावी साहब अपने जवान बेटे का जनाज़ा उठते वक्त क्या कहते हैं...!

कहते हैं--- "दुनिया का सबसे बड़ा बोझ होता है बाप के कंधे पर बेटे का जनाज़ा...!"

और आप कहते हैं कि बाप अपने बेटे की मौत का ग़म भूल गया है....!

ख़ैर.. आप नहीं समझेंगे...! समझ भी कैसे सकते हैं..!

- वोटों से आपकी झोली भर दी बदले में मिला क्या... ?

नरेंद्र मोदी सर...आप भ्रष्टाचार के विरुद्ध दुंदुभी बजा कर रणभूमि में उतरे थे... उम्मीदों के ऐसे तूमार आपने बांधे थे कि मतदाता माईबाप ने आपको झोली भर भर वोट दे दिये...!

और बदले में आपने क्या दिया... ?

नोटबन्दी जैसा इतिहास का सबसे बड़ा घोटाला...! बहुत लंबी फेहरिस्त है घोटालों की...नामचार के लिए राफेल ही काफी है..!

बैंकों को तबाह कर चंपत होते धन्नासेठ...!

संवैधानिक संस्थाओं की कुत्ताघसीटी...!

धार्मिक और जातीय विद्वेष....!

- नेहरू गांधी को कब तक कोसेंगे सर...

जंगे आज़ादी में एक दशक से ज्यादा अंग्रजों की जेल में रहे और 17 बरस देश के प्रधानमंत्री रहे जवाहरलाल नेहरू को दुनिया ए फानी से रुखसत हुये पचपन बरस हो चले हैं मोदी सर...।

वे अपने युग के विश्वनायक थे।

आप आज भी अहर्निश उन्हें कोसते रहते हैं...ऐसा शायद ही कोई चुनावी दिन गुजरता है जब आप उन पर अपने कमल सरोवर की कीच न उछालते हों...!

अच्छा सर...मान लेते हैं नेहरू गलत आदमी थे..कुछ नहीं किया उन्होंने देश के लिए,....!

तो...अब बताइये क्या किया जाये... ?

स्वर्ग से उतार कर लायें उन्हें...और इस्तीफ़ा धरा लें उनका....!

बताइये..आप ही बताइये...क्या करें... ?

सर आप तो खुद को हिन्दू हृदय सम्राट समझते हैं न...!

तो बताइये आप जो कुछ बोल रहे हैं...कर रहे हैं...वो किस हिन्दू परंपरा और संस्कार में आता है... ?

अच्छा छोड़िये ये सब... हम आपको बताये देते हैं कि जिस दौर में आपके चारण और भाट आपको विष्णु का ग्यारहवां अवतार घोषित कर रहे हैं... ईश्वर का वरदान बता रहे हैं...गाँधी, गौतम से तुलना कर रहे हैं.. ठीक उन्हीं दिनों में लाखों लोगों ने टीवी पर आपको देखकर चैनल बदलना शुरू कर दिया है...।

(आपको तो याद होगा न...जब इंदिरा को इंडिया कहा जाने लगा था तब उन्हें भी जनता ने धरती पर उतार दिया था सर)

हम सचमुच अपने महादेश के प्रधानमंत्री का सम्मान करना चाहते हैं...हम सचमुच आप उस ओहदे पर बैठे व्यक्ति विशेष पर गर्व करना चाहते हैं लेकिन आप मौका ही नहीं दे रहे सर..! ख़ैर... अगर खुद आपने मणिशंकर अय्यर के कहे को सही ठहराने के ठीका उठा लिया है तो यह देश कर भी क्या सकता है..!

बस इतना ही कर सकता है कि वक्त बेवक्त आपको आवाज़ देता रहे कि...नहीं सर हम वैसे नहीं हैं जैसा आपने हमें समझ लिया है...आप देश को समझने में भूल कर रहे हैं...! हम और हमारा देश कभी उस 'स्तर' तक नहीं उतरे जिस पर आप उतर आए हैं...!

याद रखिये उस स्तर पर कभी उतरेंगे भी नहीं।

ऑस्ट्रेलिया में अडानी की कोयला परियोजना के खिलाफ सड़कों पर उतरे हजारों छात्र-युवा

महेंद्र पाण्डेय का विश्लेषण

अडानी ग्रुप ने आस्ट्रेलिया में कोयला खदान से सम्बंधित एक के बाद एक अनेक घोषणायें की हैं। स्पष्ट होता है कि कहीं से भी इस परियोजना को आर्थिक मदद नहीं मिलने के कारण इसका उत्पादन कम किया जाएगा और इससे सम्बंधित दूसरी परियोजनाओं, जैसे रेल लाइन और पोर्ट में भी संभावित कटौती कर दी जायेगी। जाहिर है ऐसे में रोजगार के अनुमानित आंकड़े भी बदल जायेंगे, गरर इस पर ग्रुप ने चुप्पी साध ली है।

पिछले महीने अडानी ग्रुप ने ऐलान किया है कि जल्दी ही परियोजना का काम शुरू कर दिया जाएगा। एक ऐसे समय जब ऑस्ट्रेलिया में वायु प्रदूषण और तापमान वृद्धि से सम्बंधित आन्दोलन चल रहे हैं, स्कूलों के छात्र भी सड़कों पर उतरकर आन्दोलन कर रहे हैं, अडानी ग्रुप की घोषणा के बाद 8 दिसम्बर को अडानी की कोयला खनन परियोजना के विरूद्ध ऑस्ट्रेलिया के सभी बड़े शहरों में विरोध प्रदर्शन किया गया।

ये विरोध प्रदर्शन ब्रिसबेन, जहाँ अडानी ग्रुप का मुख्यालय है, के साथ-साथ सिडनी, मेलबोर्न और कैर्न्स में भी किये गए। इन आन्दोलनों में आम लोगों के साथ-साथ बड़ी संख्या में विद्यालयों और विश्वविद्यालय के छात्र भी सम्मिलित हुए। कुछ समय पहले गार्डियन में छपी एक खबर के अनुसार निवेश की कमी से परेशान अडानी की ऑस्ट्रेलिया स्थित कोयला खदान कंपनी फिर से चर्चा में है।

13 सितम्बर को कंपनी की तरफ से बताया गया कि खदान से बंदरगाह तक जो रेल लाइन बिछानी थी, अब उसकी लम्बाई को लगभग आधा कर दिया जाएगा और स्टैण्डर्ड गेज के बदले नैरो गेज की रेलवे लाइन बिछाई जायेगी। अब कोयला उत्पादन को भी 120 से 150 लाख टन प्रतिवर्ष तक सीमित करने की बात की जा रही है, जबकि आरम्भ में उत्पादन 600 लाख टन की चर्चा थी। इससे खदान के लिए अपेक्षाकृत कम निवेश की जरूरत पड़ेगी।

इस परियोजना पर अब पूंजी की कमी का असर पड़ने लगा है। ऑस्ट्रेलिया में क्वीन्सलैंड की सरकार ने स्पष्ट कर दिया है कि वहाँ की कोई भी सरकारी संस्था या बैंक इस परियोजना की कोई सहायता किसी भी तरह से और किसी भी चरण में नहीं करेगा। इसके बाद सरकारी मदद की कोई उम्मीद नहीं बची, और सभी अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं भी अपनी साख बचाने के लिए इस परियोजना से अपना पल्ला झाड़ चुकी हैं।

ऑस्ट्रेलिया के चार सबसे बड़े बैंक पहले ही अडानी को लोन देने से मना कर चुके हैं। गार्डियन में प्रकाशित एक खबर के अनुसार ऑस्ट्रेलिया सरकार को लगता है कि इस परियोजना के लिए वित्तीय मदद चीन की कुछ संस्थाओं ने दी है, इसीलिए ऑस्ट्रेलिया सरकार ने चीन की सरकार को इस बारे में पत्र भेजा है।

वर्ष 2010 में बताया गया था कि अडानी की इस परियोजना से लगभग दस हजार लोगों को रोजगार मिलेगा और देश को अरबों रुपये का राजस्व प्राप्त होगा, पर तमाम अर्थशास्त्रियों ने इन दावों को उसी समय झुठला दिया था। वर्तमान में हालत यह है कि अडानी की ऑस्ट्रेलिया की कंपनी से अनेक कर्मचारियों की छुट्टी कर दी गयी है।

पहले कभी ऑस्ट्रेलिया को पर्यावरण संरक्षण के अग्रणी देशों में शुमार किया जाता था, पर आज के दौर में यहाँ के पर्यावरण को बुरी तरीके से बर्बाद किया जा रहा है। बड़े पैमाने पर जंगल काटे जा रहे हैं, समुद्री जीवन नष्ट किया जा रहा है, कोरल रीफ मर रहे हैं और जैव-विविधता नष्ट हो रही है।

कुछ समय पहले प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया के जिन पांच देशों में जैव-विविधता सबसे तेजी से नष्ट की जा रही है, उसमें भारत और ऑस्ट्रेलिया दोनों शामिल हैं।

संयुक्त राष्ट्र की नयी रिपोर्ट के अनुसार ऑस्ट्रेलिया भी उन देशों में सम्मिलित है जो तापमान वृद्धि को रोकने के लिए पर्याप्त कदम नहीं उठा रहे हैं। इसे ऑस्ट्रेलिया की सरकार ने नकार दिया, पर वहाँ की सरकारी रिपोर्ट के अनुसार पिछली तिमाही में ही ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में 1.3 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी दर्ज की गयी है।

कुछ समय पहले तक पर्यावरण आंदोलनों में केवल कुछ गैर-सरकारी संगठन ही शामिल होते थे, फिर सामान्य जनता भी जुड़ती गयी। अब तो स्कूलों के विद्यार्थी भी अपने बलबूते पर तापमान वृद्धि के खिलाफ सड़कों पर आन्दोलन कर लेते हैं।

पिछले सप्ताह ही प्रधानमंत्री की अपील ठुकराकर हजारों की संख्या में स्कूलों के विद्यार्थी तापमान वृद्धि के मामले में सरकार की आँखें खोलने के लिए सड़कों पर उतर आये थे। अडानी की कोयला खान के विरोध में भी बड़ी संख्या में स्कूलों और यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।

अडानी ग्रुप के खदान पर काम शुरू करने के ऐलान से सरकार के साथ-साथ जनता भी हैरान है। काम शुरू करने के लिए आवश्यक स्वीकृतियों में से कम से कम दो स्वीकृतियां अभी तक इसे नहीं मिली हैं और निकट भविष्य में मिलने की संभावना भी नहीं है। ऐसे में काम शुरू करने का दावा सबकी समझ से परे है।

क्वीन्सलैंड के डिपार्टमेंट ऑफ एनवायरनमेंट एंड साइंस ने स्पष्ट कर दिया है कि बिना पूरे अप्रूवल के खनन स्थल पर कोई प्रभावी काम नहीं किया जा सकता है।